मंगलेश डबराल

बाहर

मैंने दरवाज़े बंद किये
और कविता लिखने बैठा
बाहर हवा चल रही थी
हल्की रोशनी थी
बारिश में एक साइकिल खड़ी थी
एक बच्चा घर लौट रहा था

मैंने कविता लिखी
जिसमें हवा नहीं थी रोशनी नहीं थी
साइकिल नहीं थी बच्चा नहीं था
दरवाज़े नहीं थे.

मंगलेश डबराल, हम जो देखते हैं
दिल्ली, राधाकृष्ण 1995:20